फणीश्वरनाथ रेणु

एक अन्तर्पाठ

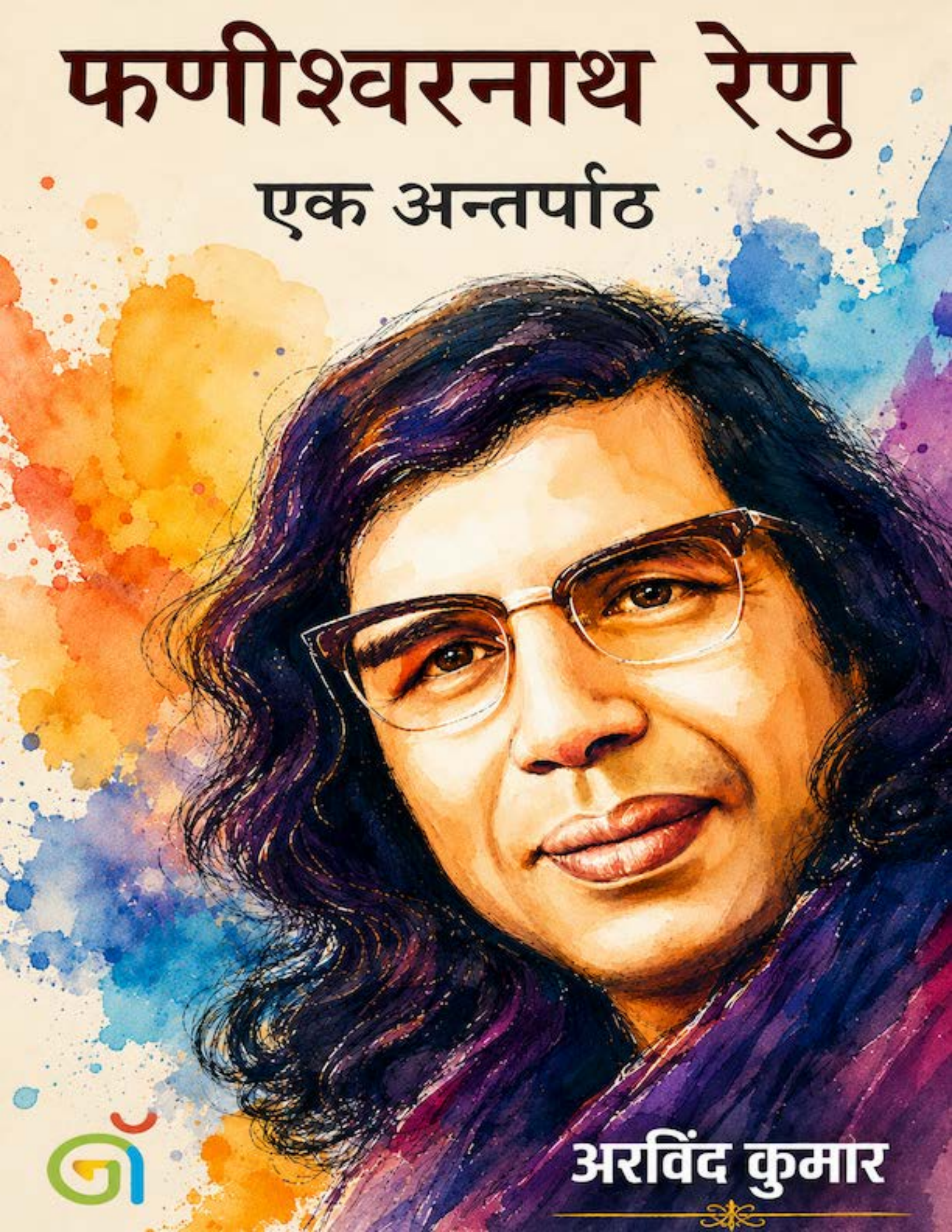

अरविंद कुमार

फणीश्वरनाथ रेणु

एक अन्तर्पाठ

अरविन्द कुमार

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जुलाई, 2026

© अरविन्द कुमार

औराही - हिंगना तथा सिमराहा के अनगढ़ पात्रों के नाम

अनुक्रम

मैं आन्दोलन में नहीं आंदोलन मुझमें है	4
रेणु की कहानियों का आरंभिक	16
रेणु की कहानियों का उत्तरकाल	32
स्त्री सत्ता और लोक विमर्श	59
कौमी घृणा और युवा सपनों का अन्त	72
गूँगी आवाजों का कोरस और रेल की सीटी	83
बीमारों की दुनिया में नये सवेरे की आशा	97
आजादी के बाद की मुश्किलें और वामपंथ	109
युवा नैतिकता और दिशाहीनता के प्रश्न	122
चटाक् चट् धा बनाम हड्डियों का कोरस	134
ऋणजल/धनजल : एक दुखमय गद्य	147

परिशिष्ट

उत्तर औपनिवेशिक भारत और 'मैला आँचल'	164

मैं आन्दोलन में नहीं आंदोलन मुझमें है

रेणु की जन्मशती गुजर चुकी है। यह ऐसे समय में थी जब पूरा देश कोरोना जैसी महामारी की चपेट में था। फिर भी लोगों ने रेणु को याद किया। लगभग दर्जनभर पत्रिकाओं ने उनपर अपने विशेषांक केन्द्रित किए। उस महामारी में भी उनके चाहनेवालों ने जगह-जगह जाकर उनपर होने वाले कार्यक्रमों में हिस्सा लिया। यह इसलिए कि रेणु जन-जन में स्वीकार्य हो चुके थे।

आखिर रेणु कौन थे? कोसी जैसे अविकसित प्लावित क्षेत्र के एक साधारण मनुष्य जिनके जन्म को बहुत जरूरी नहीं माना गया था। उनका परिवार तब कर्ज में डूबा था जो नहीं चाहता था कि उसे नये-नये बच्चों की परवरिश करनी पड़े। शायद इसीलिए रेणु का नाम प्रारंभ में ऋण में डूबे एक परिवार की गाथा की तरह थारिनुआ जो बाद में अपभ्रंश से परिमार्जित होते हुए रेणु हो गया। रेणु एक जगह कहते भी हैं कि 'जब मैं पैदा हुआ था तो घरवालों पर कुछ ऋण हो गया। दादी बोलीं 'अरे यह तो रिनुआ है।' बाद में उसी रिनुआ से रिणु और फिर रुणु हो गया। फिर पिताजी के एक मित्र ने कहा - इसे रेणु कहो रेणु। और मैं रेणु हो गया। रेणु 1921 में पैदा हुए। उसके ठीक पहले 1920 में महात्मा गाँधी ने अंग्रेजों के खिलाफ असहयोग आन्दोलन शुरू किया था जो 1922 में चौरा - चौरी घटना के बाद वापस ले लिया गया। हम थोड़ा और पीछे जाएं तो 1917 में बिहार में हुए चम्पारण सत्याग्रह या नील सत्याग्रह की वह पृष्ठभूमि है जिसे विरासत में लेकर रेणु पैदा हुए थे। आज सिमराहा

रेणु-गाँव हो गया है। रेणु का जन्म - स्थल औराही हिंगना है । सिमराहा से जिसकी दूरी 3 कि. मी. है। यानी एक अनगढ़ जीवन जो कभी गढ़ नहीं सका । पर जो कथा की दुनिया का सरताज जरूर बन गया । इसलिए जब वे जवान हुए तो धीरे-धीरे महात्मा गाँधी के सत्याग्रह की ओर झुकते गए और फिर भारत छोड़ो आन्दोलन का एक हिस्सा बने। 1942 में गिरफ्तार होकर पहले भागलपुर जेल और फिर 1944 में पटना मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती होना पड़ा । वहाँ रेणु एक क्रांतिकारी बन्दी के रूप में इलाज के लिए लाए गए थे। तब उनके हाथ में बेड़ियां थीं और वार्ड में पुलिस का पहरा था। रॉबिन शॉ पुष्प से बातचीत में लतिका जी कहती हैं "पहली बार दिसम्बर 1944 में उनसे मिले, उस समय पटना मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल में हम ट्रेनिंग में थे, मिडवाइफरी ट्रेनिंग में। वहीं एक कमरे में उनको स्थान दिया गया था। भागलपुर जेल से बारह कैदी पटना आए, ग्यारह रिलीज हो गए थे । उनको रिलीज नहीं किया गया था। डॉ. टी. एन. बनर्जी के अंडर में थे । उनका लड़का प्रशान्त बनर्जी हाउस सर्जन था । उनको टी. बी. था, ड्राइप्लूरिसी थी दाहिने फेफड़े में। पहले दिन जब हम उनको देखने गए तो चारों तरफ किताबें, बीच में एकदम दुबले-पतले आदमी। चारों तरफ पुलिस । इतने दुबले-पतले आदमी के पीछे इतनी पुलिस!' देश आजाद हुआ पर रेणु की बीमारी बढ़ती गई तथा पटना मेडिकल कॉलेज अस्पताल से उनका एक रिश्ता बनता चला गया। हालांकि 1950-51 में वे राणाशाही के खिलाफ हुई जनक्रांति में नेपाल की जनता के साथ रहे पर 1952 में फिर बीमार पड़े। 1952 में जब वे टी.बी. के मरीज हो गए तो लतिका जी की देखरेख में ही रहे। हालाँकि उसी वर्ष उन्होंने उनसे विवाह भी कर